Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

भाषा प्रसार में समाचारपत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

Manjeet Devi*

M.A, M.Phils., UGC-NET Qualified

***सार –** मनुष्य के पृथ्वी पर जन्म लेते ही आवश्यकताओं की अर्गला बनना प्रारंभ हो जाती है। यह प्रक्रिया मरणोपरांत तक चलती रहती है। मनुष्य अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के अतिरिक्त विचार, हर्ष-विषाद आदि को किसी न किसी माध्यम द्वारा व्यक्त करने का प्रयास करता है और इन विचारो को व्यक्त करने के लिए उसे एक सशक्त जनसंचार माध्यम की आवश्यकता रहती है। मनुष्य के दैनिक जीवन में समाचार पत्र-पत्रिका आदि जनसंचार माध्यमों का विशेष महत्त्व रहा है। मनुष्य इन माध्यमों के माध्यम से अपनी भाषा में या सम्प्रेषणीय भाषा में अपनी बात जन-जन तक पहुँचा सकता है। राष्ट्रीय स्तर पर और कुछ हद तक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा की सम्प्रेषणीयता में काफी वृद्धि देखने को मिल रही है। इसी तथ्य को हमारी सरकार भी स्वीकार कर दिन-प्रतिदिन हिन्दी को बढ़ावा देने के लिए भरपूर प्रयास कर रही है। जनसंचार के माध्यमों ने हिन्दी विकास की अवधरणा को अधिक बल प्रदान किया है।*

---------------------------------x---------------------------------

समाचार पत्रों का भाषायी योगदान:

समस्त जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र अपनी विशेष उपयोगिता रखते हैं। यह माध्यम (समाचार पत्र) सबसे पुरातन जनसंचार माध्यम होने के कारण संपूर्ण विश्व में अपना पाठक वर्ग एवं लोकप्रियता बनाने में आज तक सपफल रहा है। समाचार पत्रों का भाषायी योगदान हमेशा उल्लेखनीय रहा है। हिन्दी समाचार पत्रों को भी इन्हीं संदर्भों में देखा जा सकता है।

अपने आरंभिक काल में हिन्दी समाचार पत्रों ने जनचेतना को जागृत करने का जो बीड़ा उठाया था उसके कारण समाज में इनकी पहचान और लोकप्रियता बहुत तीव्र गति से बढ़ने लगी। जिस समय लोगों के पास खाने-पहनने के मूलभूत संसाध्नों की कमी थी उस समय भी इनकी बिक्री बडे स्तर पर होना दर्शाता है कि समाज जनसंचार के इस माध्यम को सार्थक रूप में अंगीकार कर रहा था। लोक सामूहिक रूप से चंदा एकत्र करके भी समाचार पत्रों को खरीदते और पढ़ते थे। यह उस समय की आवश्यकता थी। धनाभाव था अतः पंचायती रूप में एक समाचार पत्र को खरीदकर पढ़ने का प्रचलन बना। इससे हिन्दी जनसंचार माध्यम को एक नई दिशा मिलनी प्रारंभ हुई जो वर्तमान तक आते-आते व्यापक संदर्भों में बहुत विशाल पटल पर उपस्थित हो चुकी है। अब हिन्दी समाचार पत्रा हिन्दी संचार का अमोघ अस्त्र बन चुका है। जिस रूप में आज इसकी लोकप्रियता समाज में व्याप्त है वह निश्चित रूप से उल्लेखनीय भी है और अनुकरणीय भी।

यदि हम राष्ट्रीय संदर्भ में देखें तो हिन्दी समाचार पत्रों एवं उनकी प्रतियों की संख्या अन्य भाषायी समाचार पत्रों से सर्वाध्कि है। इन पत्रों की सर्वाध्कि संख्या हिन्दी भाषा के प्रसार को अपने मूल रूप में रेखांकित करती है। दैनिक समाचार पत्रों के प्रकाशन में उत्तरप्रदेश का स्थान अग्रिम रहा है।'1 स्वाभाविक है कि जिस भाषा को बोलने एवं समझने वाले अधिक लोग होंगे उसी भाषा को जनसंचार माध्यमों में प्राथमिकता प्राप्त होगी। इस दृष्टि से हिन्दी भाषी समाचार पत्रों की संख्या का सर्वाधिक होना स्वाभाविक है। हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या अधिक होने से इनका प्रसार अधिकाधिक जन तक होता है। इस दृष्टि से ये हिन्दी समाचार पत्र हिंदी भाषी क्षेत्रों तक पहुचते हैं। हिंदी भाषियों द्वारा इन्हें पढ़ने एवं समझने की कोशिश की जाती है जिससे उनके बीच हिन्दी को लेकर एक सकारात्मक भूमिका का निर्माण होता है। इस प्रक्रिया के दौरान हिन्दी भाषियों के मध्य हिन्दी भाषा का प्रचार और प्रसार समाचार पत्रों के माध्यम से होता है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या एवं लोकप्रियता प्रत्येक हिन्दी भाषी के लिए गौरव का विषय है। यह भाषा भारत उपमहाद्वीप में तो आसेतु हिमालय तक व्याप्त है ही, इसके अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व एशिया, पूर्व तथा दक्षिण अफ्रीका, यूरोप के कई देशों, अमेरिका और कनाड़ा तथा एटलांटिक महासागर के कई द्वीप देशों में विद्यमान है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से इन दो युगों के लंबे दौर में भारत की परराष्ट्र नीति के अनुसार उसके जो अंतर्राष्ट्रीय

www.ignited.in

संबंध विकसित हुए हैं, इनमें भाषा की बहुत बड़ी भूमिका रही है। किसी भी देश के जन-जीवन का परिचय चूँकि उसकी भाषा को आत्मसात् किये बिना नहीं प्राप्त किया जा सकता, इसलिए भारतीयता का अध्ययन करने वाले विद्वानों ने हिन्दी भाषा को बड़ा प्रश्रय दिया है। इध्र अनेक देशों में भारतविद्या या "इंडोलोजी" को एक विषय के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है और विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में उसका एक सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम स्वीकार करके उसमें हिन्दी भाषा को भी समुचित स्थान दिया है। परिणामतः यूरोप और अमेरिका में हिन्दी के सैंकड़ों विद्यार्थी एकत्र हो गये हैं। हिन्दी भाषा की जीवंतता का परिचय पाते रहने के कारण ये हिन्दी पत्रा-पत्रिकाओं के प्रति विशेष लालायित रहते हैं, जिससे विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता को विकसित होने का अवसर मिला है।'2 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी भाषा की लोकप्रियता हिन्दी समाचार पत्रों के माध्यम से दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

वैश्विक परिदृश्य से हिन्दी समाचार पत्रों की धूम मची हुई है। दिन-प्रतिदिन इनको पढ़ने वालों की संख्या में लगातार वृद्धि देखने को मिल रही है। ऐसा लगता है कि हिन्दी समाचार पत्रों के माध्यम से हिन्दी वैश्विक स्तर पर महत्त्वपूर्ण भूमिका मे रहेगी। 'अतीत और वर्तमान की कुछ पृष्ठभूमि इस विवरण से मिल जाती है। विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य बहुत ही भव्य दिखायी पड़ रही है। जहाँ आज कई साप्ताहिक निकल रहे हैं वहाँ के लोग दैनिक का प्रयास कर रहे हैं और जहाँ कुछ भी नहीं है वहाँ साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक का श्रीगणेश होने वाला है। संसार के कोने-कोने में हिन्दी के प्रति जो प्रेम का भाव आज उमड़ रहा है वह निश्चित रूप से विदेशों में हिन्दी पत्रकारिता के समुज्जवल भविष्य की सुदृढ़ आधार-भूमि प्रस्तुत करेगा।'3 विदेशों में हिन्दी समाचार पत्रों एवं पाठकों का संतुलित समीकरण दर्शाता है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी माँग व लोकप्रियता बढ़ रही है।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य में हिन्दी प्रचार-प्रसार को समाचार पत्रों ने जिस रूप में स्थापित किया है वह अनन्य है। क्योंकि हिन्दी समाचार पत्रों के माध्यम से केवल हिन्दी भाषा का विकल्पन ही उपस्थित नहीं किया जाता बल्कि उसका सुदृढ़ीकरण, मानकीकरण, स्थायीकरण और नियमन भी होता है। जनसंचार का यह माध्यम पाठक वर्ग के सम्मुख वैकल्पिक सुविधा के साथ उपस्थित रहता है। पाठक जब चाहे, जितनी बार चाहे इसे पढ़ सकता है। इससे हिन्दी पठन-पाठन की प्रक्रिया को प्रोत्साहन मिलता है। वर्तमान में प्रकाशित समाचार पत्रों की भाषा इतनी सरल, व्यावहारिक और रोचक होती है कि जिससे मातृभाषियों के अतिरिक्त अन्य संपर्क भाषी और निकट भाषी उसे सहजता के साथ आत्मसात् कर सकते हैं। संदर्भ और प्रसंग को समझने में विशेष बाधा न आए इसका विशेष ख्याल समाचार पत्र लेखन में रखा जाता है। हिन्दी समाचार पत्रों के समाचार किसी भी भाषा-भाषी को सरलता से समझ में आ जाते हैं। इन सब कारणों से जनसंचार के इस माध्यम द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार संभव हो सका है।

राष्ट्रीय संदर्भ में हिन्दी समाचार पत्रों की स्थिति काफी आशास्पद प्रतीत हो रही है। 'विभिन्न सर्वेक्षणों के अनुसार जागरण, पंजाब केसरी, दैनिक भास्कर, नई दुनिया, नवभारत टाइम्स, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, ट्रिब्यून आदि सर्वाधिक बिक्री वाले पत्र हैं। मासिक पत्रों में 'कल्याण' की संख्या देश में

सर्वाध्कि हैं। हिन्दी के ये पत्र आज पुस्तकाकार फोल्डर, पेम्फलेट, पोस्टकार्ड साइज, डाइजेस्ट और टेबलोयड-इन रूपों में प्रकाशित दिखाई देते हैं। इनमें लघु पत्रों की संख्या सर्वोपरि है। इधर सम्पादन कला के व्यवस्थित प्रशिक्षण, पी.टी.आई., भाषा, समाचार भारती और अन्य एजेन्सीज के सुसंचालन की दिशा में गंभीर प्रयत्न किए जा रहे हैं। निश्चय ही हिन्दी पत्रकारिता के समुज्जवल भविष्य की अनेक सम्भावनाएँ हैं।'4 इस प्रकार विविध प्रकार के हिन्दी समाचार पत्रों द्वारा हिन्दी भाषा को प्रचारित होने का अवसर प्राप्त हो रहा है।

भाषायी योगदान की दृष्टि से हिन्दी समाचार पत्रों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। इस बात की अनदेखी किया जाना बिल्कुल संभव नहीं है बल्कि इन्हें और अधिक पृष्ठ करने की आवश्यकता है। वर्तमान परिस्थिति आशान्वित करती है कि हिन्दी भाषा भारतीय महाद्वीप से होती हुई विश्व भाषा की ओर केवल कदम ही नहीं बढ़ायेगी बल्कि उस पदवी से स्वयं को विभूषित करने में सपफल भी होगी।

भाषा प्रसार में पत्रिकाओं की भूमिका:

हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के दृष्टिकोण से हिन्दी पत्रिकाओं ने सदैव अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है। वर्तमान संदर्भ में हिन्दी पत्रिकाएँ लोकप्रियता की दृष्टि से प्रथम पंक्ति में खड़ी दिखाई दे रही हैं। इसी का परिणाम है कि आज बड़ी संख्या में हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। इन हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन केवल हिन्दी भाषी क्षेत्रों तक ही सीमित नहीं है बल्कि हिंदी भाषी क्षेत्रों में भी इनका प्रकाशन हो रहा है। हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन में हिंदी भाषी क्षेत्रों में सामाजिक स्तर पर भाषा विरोध जैसी कोई स्थिति देखने को नहीं मिलेगी, भले ही राजनैतिक स्तर पर कुछ भी होता रहे। हिंदी भाषी क्षेत्रों में केवल हिन्दी भाषी पाठक वर्ग को ही ध्यान में रखकर हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन नहीं

होता बल्कि संबंधित संपूर्ण क्षेत्र को ध्यान में रखकर होता है। आज हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन मिशन से होते हुए एक भारी उद्योग तक पहुँच चुका है।

आज संपूर्ण भारत में हिन्दी पत्रिकाएँ अपने उत्कृष्ट स्वरूप में प्रकाशित हो रही हैं। इन पत्रिकाओं की माँग बढ़ने का सबसे बड़ा कारण इनका क्षेत्रीय स्तर से उठकर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर का होना है। अधिकांशतः स्थानीय भाषा की पत्रिका का क्लेवर क्षेत्रीय और प्रांतीय पृष्ठभूमि तक सीमित रहता है जबकि हिन्दी में प्रकाशित होने वाली पत्रिकाएँ मुख्यतः राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय वैचारिकता की पोषक रहती हैं।

वर्तमान संदर्भ में हिन्दी पत्रिकाएँ जहाँ संपूर्ण भारत में प्रमुखता के साथ प्रकाशित हो रही हैं वहीं इनका अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशन भी सामने आने लगा है जो एक बहुत ही शुभ संकेत है। यह परिपाटी निकट भविष्य में पूर्ण सार्थकता के साथ आगे बढेगी इसके संकेत मिल रहे हैं। अभी तक केवल हिन्दी साहित्य, मनोरंजन, ज्ञान-विज्ञान, राजनीति, कृषि आदि सामाजिक संदर्भों से जुडे विषयों वाली हिन्दी पत्रिकाएँ बहुत प्रभावी रूप से प्रकाशित होती रहती थी। लेकिन अब तकनीकी, वैज्ञानिक अनुसंधानात्मक, चिकित्सा आदि विषयों से संबंधित लगभग सभी प्रकार की पत्रिकाओं के प्रकाशन हमारे सामने आ रहे हैं। जो लोग मानते रहे हैं कि विज्ञान आदि से संबंधित सामग्री की उपलब्ध्ता केवल अंग्रेजी माध्यम में ही संभव है उनकी

अवधारणाएँ अब खंडित हो रही हैं। वर्तमान में न्यायिक दण्ड संहिता से जुड़ी पत्रिकाएँ एवं विभिन्न विज्ञान एवं अनुसंधान केंद्रों द्वारा अपने विभाग, विषय और अनुसंधन से जुड़ी पत्रिकाएँ अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी में भी प्रकाशित हो रही हैं। इन सभी विभागों और अनुसंधान केंद्रों में केंद्र और राज्य सरकार की ओर से हिन्दी अधिकारियों सहित उनका एक पूरा विभाग संबंधित कार्यों को देखता है एवं संबंधित कार्यों एवं क्रियाकलापों से संलग्न हिन्दी पत्रिकाओं का संपादन करता है। निजी संस्थानों द्वारा भी इस ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है तथा वे भी अब अपनी हिन्दी की वार्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन करने में रूचि दिखा रहे हैं। यह सब हिन्दी प्रचार प्रसार को वेग प्रदान करने वाली प्रक्रिया साबित हो रही है।

आज भारत के बहुत बडे हिंदी भाषी समुदाय द्वारा भी हिन्दी पत्रिकाओं को खरीदा और पढ़ा जा रहा है। भारत का मध्यमवर्गीय हिंदी भाषी समाज इसके प्रति सर्वाधिक रूप से जागृत होकर हमारे सामने आ रहा है। परिणामतः उसकी आवश्यकताओं के संदर्भ में हिन्दी पत्रिकाओं के प्रकाशन दिखाई दे रहे हैं। एक प्रकार से यह हिन्दी भाषा की समसामयिकता के फलस्वरूप ही हो रहा है। आज हिन्दी भाषा ने अपने आप को भाषा उद्योग के रूप में सिद्ध कर दिखाया है। इससे भाषिक औद्योगिकता की संकल्पना सिद्ध हुई और लोग हिन्दी को औद्योगिक क्षेत्र के रूप में देखने लगे तथा उसके साथ जुड़कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के संदर्भों को तलाशने में प्रवृत्त हुए। इससे हिन्दी पठन-पाठन को नई पहचान मिली।

आधुनिक समय में हिन्दी का जो विस्तृत रूप दिखाई दे रहा है वह हिन्दी पत्रिकाओं पर भी आधारित है। हिन्दी पत्रिकाएँ हिन्दी रचनाओं, हिन्दी साहित्यकारों एवं हिन्दी आंदोलनों का संचालन करती रही हैं। आज उत्तम प्रकार की हिन्दी रचनाएँ पाठकों तक हिन्दी पत्रिकाओं के माध्यम से पहुँच रही हैं। 'हंस' और 'आलोचना' जैसी पत्रिकाओं को पढ़कर पाठक वर्ग गर्व महसूस करता है। इस प्रक्रिया के दौरान हिन्दी भाषा के साथ-साथ हिंदी भाषी पाठक भी धीरे-धीरे इन हिन्दी पत्रिकाओं से जुड़ने लगता है। 'हिन्दी के आधुनिक साहित्य का इतिहास एक तरह से पत्र-पत्रिकाओं में लिखे गए साहित्य का इतिहास है। आधुनिक हिन्दी में जितने महत्त्वपूर्ण आंदोलन छिडे, पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से छिडे। न जाने कितनी श्रेष्ठ रचनाएँ पाठकों के सामने पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से आई।'5 हिंदी भाषी पाठक का इन हिन्दी पत्रिकाओं के जुड़ने से उनके बीच हिन्दी की विभिन्न प्रयुक्तियों का निर्माण होता है। और हिन्दी हिंदी भाषियों के बीच पनपने लगती है।

हिन्दी पत्रिकाओं ने बहुत ही तीव्र गति से आधुनिक संदर्भ में अपने स्वरूप को बदला है। लोगों को सभी प्रकार की जानकारी मनोरंजन के साथ हिन्दी माध्यम द्वारा प्रेषित करना यही एकमात्र इनका लक्ष्य रहा है। अब तो मल्टी लेग्युअल पत्रिकाओं का भी प्रकाशन धड़ल्ले से हो रहा है। इसमें हिन्दी के अतिरिक्त अन्य भाषाओं के भी लेख छपते हैं। जब अन्य भाषी हिन्दी के अतिरिक्त अन्य आलेखों को पढ़ता है तो अनायास ही वह हिन्दी आलेखों की ओर भी कुछ हद तक मुड़ता है। इस प्रकार वह हिन्दी के आलेखों का आनंद ले सकता है और हिन्दी भाषा से रूबरू हो पाता है। इस प्रकार विभाषियों के बीच इस प्रकार की पत्रिकाएँ अपना स्थान निर्धारित करने में सफल होती हैं। इन पत्रिकाओं में मेरठ शहर से प्रकाशित 'समय-सरिता' का नाम प्रमुखता के साथ लिया जा सकता है।

वर्तमान संदर्भ के अनुरूप अपने आप को आकर्षक बनाने के लिए हिन्दी पत्रिकाओं ने अपने क्लेवर में काफी परिवर्तन किए हैं। 'हिन्दी पत्रकारिता ने पत्रकारिता के विभिन्न आयामों में एक प्रतिस्पर्धात्मक स्वरूप अख्तियार कर लिया है। इसके साथ ही साथ हिन्दी पत्रकारिता ने बदलती परिस्थितियों के

www.ignited.in

अनुकूल खुद को काफी बदला और व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के युग में आकर उसमें बदलाव होने की प्रक्रिया अब और तेजी से जारी है।'6 इन परिवर्तनों के चलते हिन्दी पत्रिकाएँ अन्य पत्रिकाओं से प्रतिस्पर्धा कर सकेंगी एवं

अधिकाधिक पाठक वर्ग को अपनी ओर आकर्षित कर पायेगी इसकी पूरी सम्भावना व्यक्त की जा रही है।

जब हम भाषा प्रचार की चर्चा पत्रिकाओं के संदर्भ में करते हैं तो इस धरातल पर हमें देखने को मिलता है कि इसमें हिन्दी की पत्रिकाओं ने बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान आज तक प्रदान किया है। पहले जहाँ इनका पाठक वर्ग केवल हिन्दी क्षेत्र तक सीमित हुआ करता था वहीं आज भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी पत्रिकाओं को पढ़ा जा रहा है। इनकी सार्थकता को स्वीकार किया जा रहा है। यह तो राष्ट्रीय संदर्भ है। हिन्दी पत्रिकाएँ इससे बढ़कर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्थिति निरंतर सुदृढ़ करने की ओर अग्रसर है। हिन्दी पत्रिकाओं के उपयोगी प्रकाशन भारत से बाहर बडे ही प्रभावी रूप में देखने को मिल रहे हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि हिन्दी पत्रिकाओं द्वारा वैश्विक समुदाय को हिन्दी भाषा की ओर आकर्षित करने में सफलता मिल रही है। आने वाले समय में यह स्थिति और अध्कि सुदृढ़ होगी तथा भाषा प्रचार में इसकी भूमिका भी निर्विवाद रूप से प्रभावी होकर सामने आयेगी।

संदर्भ सूची:

1. हिन्दी पत्रकारिता इतिहास एवं संरचना, प्रो. रमेश जैन, आविष्कार पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, जयपुर, प्रथम संस्करण-2006, पृ. 51

2. हिन्दी पत्रकारिता विविध आयाम भाग-1, डॉ. वेदप्रताप वैदिक, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2002, पृ. 289

3. वही, पृ. 299

4. जनपत्रकारिता जनसंचार एवं जनसम्पर्क, प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित, संजय प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण-2009, पृ. 103

5. हिन्दी पत्रकारिता कल, आज और कल, सुरेश गौतम, वीणा गौतम, सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण-2001, पृ. 372

6. इक्कीसवीं सदी और हिन्दी पत्रकारिता, अमरेंद्र कुमार और निशांत सिंह, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2006, पृ. 197

Corresponding Author

Manjeet Devi*

M.A, M.Phils., UGC-NET Qualified

www.ignited.in